

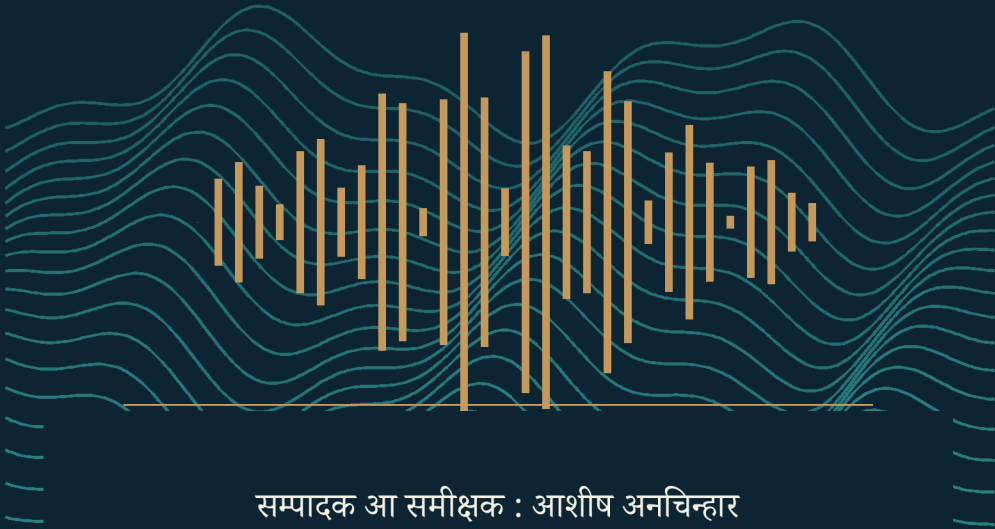
गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५२

जगदीश प्रसाद मण्डल

एकटा बायोग्राफी : पुनर्पाठ

जीवनी, साक्ष्य आ लोकइतिहास



सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५२

जगदीश प्रसाद मण्डल — एकटा बायोग्राफी

जीवन-साक्ष्य, लोकइतिहास आ साहित्यक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

“जगदीश प्रसाद मण्डल—एकटा बायोग्राफी” गजेन्द्र ठाकुरक विस्तृत मैथिली जीवनी अछि। उपलब्ध फाइलमे प्रथम संस्करण २०१३ आ पाँचम संस्करण २०२६क प्रकाशन-विवरण, प्रत्यक्ष बातचीतक स्वीकारोक्ति, मुख्य जीवनी आ छह परिशिष्ट उपस्थित अछि। ई आलोचना केवल व्यक्ति-प्रशंसा नहि, जीवन-वृत्तान्तक साक्ष्य-रचना आ साहित्यिक रूपक विवेचन करैत अछि।

एहि अध्ययनमे मूल जीवनीकें स्रोत मानल गेल अछि; संवादक प्रतिलिपि, न्यायालयीय अभिलेख, स्कूलक रजिस्टर अथवा ग्राम-तथ्यक स्वतंत्र प्रमाण-फाइल उपलब्ध नहि। तें लेखकद्वारा प्रस्तुत विवरण आ निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्यक बीच भेद अनिवार्य राखल गेल अछि।

अध्ययनक मूल अनुक्रम

- 01 — जीवनीक स्रोत-आधार : संवाद, स्मृति आ अभिलेख
- 02 — जन्म, परिवार आ संयुक्त जीवनक सामाजिक इतिहास
- 03 — बेरमा : गामक जाति, धर्म आ सांस्कृतिक संरचना
- 04 — शिक्षा, कृषि आ श्रमिक आत्मनिर्भरता
- 05 — भूमि, न्याय आ संघर्षक दस्तावेजी जाँच
- 06 — राजनीतिक सहभागिता, पंचायत आ जेल-यात्रा
- 07 — साहित्यिक अवदान, कृतिपञ्जी आ जीवन-रचना सम्बन्ध
- 08 — पाँचम संस्करणक सम्पादकीय गुण आ सीमासभ

01 जीवनीक स्रोत-आधार : संवाद, स्मृति आ अभिलेख

“जगदीश प्रसाद मण्डल—एकटा बायोग्राफी”क आरम्भमे लेखक अपन सूचनाक आधार स्पष्ट करैत छथि: स्वयं मण्डलजीसँ बातचीत, हुनक पुत्र डॉ. उमेश मण्डलसँ संवाद, बेरमा आ आसपासक निवासीसभक साक्षात्कार तथा उपलब्ध समकालीन अभिलेखक तुलना। स्रोतक ई स्वघोषित बहुस्तरीयता जीवनीक एक सशक्त सम्भावना अछि। महत्त्वपूर्ण ई अछि जे लेखक अपन गाम मेहथक भौगोलिक निकटता सेहो स्वीकार करैत छथि; एहन निकटता जानकारीक सुविधा आ आत्मीय पक्षधरता दुनू पैदा कऽ सकैत अछि।

जीवनीक दावाक प्रमाण-पद्धतिमे साक्षात्कारक तिथि, कथनकर्ताक भूमिका, प्रत्यक्ष घटनाक साक्षी आ पुनःकथित स्मृतिक भेद अनिवार्य अछि। प्रत्येक पारिवारिक कथनक विरोधमे स्वतंत्र अभिलेख भेटत ई आवश्यक नहि; मुदा एहन कथा केँ सत्यापित ऐतिहासिक घटना कहबाक आधार स्पष्ट हो। आत्मीय निकटता दस्तावेजी जिम्मेदारी समाप्त नहि करैत।

पुस्तक २०१३क प्रथम संस्करण आ २०२६क पाँचम संस्करणक सूचना दैत अछि। एहि संस्करण-इतिहासक भीतर कखन कोन सूचना जोड़ल गेल, संशोधित भेल, अथवा पूर्व पाठ हटाओल गेल—एहिसँ जीवनीक वस्तुगत विश्वसनीयता आ सम्पादकीय प्रक्रिया समझब अधिक सुलभ होयत।

02 जन्म, परिवार आ संयुक्त जीवनक सामाजिक इतिहास

मुख्य जीवनी ५ जुलाई १९४७ जन्मतिथिक उल्लेखसँ आरम्भ होइत अछि। आजादीक निकट समयक सन्दर्भ लेखककें व्यक्ति-जीवन आ राष्ट्रीय इतिहास जोड़ेबाक अवसर दैत अछि। मुदा जन्मतिथिक सत्यापन, तत्कालीन प्रशासनिक परिवर्तन आ जीवनी-घटनाक सहसम्बन्ध अलग प्रमाणक विषय अछि; राष्ट्रीय इतिहासक सामान्य पृष्ठभूमि जीवनक विशिष्ट तथ्यक स्थान नहि लेत।

पितृ-वियोग, संयुक्त परिवार, कुटुम्बक दायित्व आ कृषि-श्रमक स्मृति एहि जीवनीमे व्यक्ति-निर्माणक मुख्य आधार छथि। जीवनीकार परिवारकें संरक्षणक रूपमे देखैत छथि; एही संग घरक असमान श्रम-वितरण, महिलाक योगदान आ आर्थिक संसाधनक सीमाक विवेचन जोड़ला पर सामाजिक चित्र अधिक सन्तुलित बनत।

लेखकक परिवार-केन्द्रित शैली पाठककें एक व्यक्ति जकाँ जगदीश प्रसाद मण्डलक निकट लैत अछि; तथापि जीवनीक नैतिक लक्ष्य स्मृतिक मर्म सुरक्षित राखि ओहि स्मृतिक सत्यता जाँचबाक सम्भावना खुलल राखब अछि।

03 बेरमा : गामक जाति, धर्म आ सांस्कृतिक संरचना

बेरमा गाम जीवनीक मात्र पृष्ठभूमि नहि, जगदीश प्रसाद मण्डलक सामाजिक दृष्टिक पहिल पाठशाला थिक। स्रोतमे टोल, जाति, कुटुम्ब, पूजा, पंचायत, कृषि आ सामान्य सार्वजनिक जीवनक विस्तृत प्रसंग अछि। एहन ग्राम-अध्ययन एक व्यक्ति-जीवनीकें लोकइतिहासक दस्तावेज बनाबैत अछि।

मुदा जातीय-सामाजिक रेखाचित्र लिखैत कोनो समुदायकें स्थिर स्वभाव अथवा विरासतमे प्राप्त एकहि आचरणसँ परिभाषित करब उचित नहि। गामक भूमिस्वामित्व, पेशागत सम्बन्ध, महिला-श्रम, स्थलान्तर आ शिक्षा पहुँचमे समयानुसार परिवर्तनक दस्तावेज जीवनीक समाजशास्त्रीय दावाक स्वतंत्र जाँच बनत।

गामक धार्मिक व्यवहार आ सामाजिक रूढ़िक चर्चा तखन अधिक प्रामाणिक होयत जखन लेखक वैचारिक असहमतिक बीच पक्षसभक वास्तविक कथन आ प्रसंग निर्दिष्ट करैत छथि। आलोचना एहि साक्ष्य-संतुलनकें महत्त्व दैत अछि।

04 शिक्षा, कृषि आ श्रमिक आत्मनिर्भरता

बेरमाक प्राथमिक शिक्षा, झंझारपुरक विद्यालय आ उच्च शिक्षाक प्रसंग व्यक्ति-जीवनक बौद्धिक यात्रा रचैत अछि। सामाजिक-सांस्कृतिक परिचयक संग शिक्षा मात्र उपाधि नहि, स्वयं ज्ञान अर्जित करबाक साधन बनैत अछि। स्रोतक शैक्षिक विवरणकें सम्बन्धित संस्थानक ऐतिहासिक रजिस्टरसँ जोड़ल जाय तँ पाठक अध्यायवार प्रगति अधिक ठोस ढङ्गसँ देखत।

कृषिक वर्णनमे खेत, बटाइ, बीआ, रौदी, बाढ़ि, सिंचन, नगदी खेती आ महाजनक दबाव सन स्थानीय पद उपस्थित अछि। एहिसँ जीवनी सामान्य राजनीतिक सम्मानग्रन्थक सीमासँ बाहर आबैत अछि। कृषि-शब्दावली बिनु अशुद्धिक मानकीकरणक जाँचि मूल क्षेत्रीय स्वर सुरक्षित राखब चाही।

मण्डलजीक साहित्यिक दृष्टिपर कृषिक असरक परीक्षण कृति-वार आवश्यक अछि। खेतसँ जुड़ल जीवनक अनुभव उपन्यासक दृश्य आ पात्र निर्णयमे कतबा प्रत्यक्ष उतरैत अछि, ई केवल जीवनी-सन्दर्भसँ नहि, उपन्यास-पाठसँ स्पष्ट होयत।

05 भूमि, न्याय आ संघर्षक दस्तावेजी जाँच

भूमि सम्बन्धी विवाद, बटाइदारी, कब्जा, कागजी स्वामित्व आ मुकदमे जीवनीक एक केन्द्रीय धुरी बनैत अछि। लेखक इन्हीं घटनामे मण्डलजीक सक्रिय सार्वजनिक जीवनक मानवीय साहस देखैत छथि। जीवनीक कलात्मक रूपमे विरोधी शक्तिक पहिचान आ संघर्षक आरोहण पाठककें कथा-संघर्षक सघनता दैत अछि।

मुदा न्यायालय, थाना अथवा व्यक्तिविशेषक विरुद्ध घटना-विवरणकें साहित्यिक नाटकीयता जकाँ प्रस्तुत करबामे प्रमाणक विशेष सावधानी आवश्यक अछि। प्राथमिकी, आदेशक दिनाङ्क, मुकदमा-संख्या, पक्षकारक वक्तव्य आ अन्तिम न्यायादेशक अलग पञ्जी नहि रहल तखन आरोप स्रोतक कथन रूपें लिखल जाय, कानूनी सत्यक रूपें नहि।

जीवनीमे विवादक समानार्थी केवल नैतिक विजेता आ नैतिक हारनिहार नहि अछि। नीति, आर्थिक गरिमा आ पारिवारिक जोखिमक विरोधी दबावसँ पात्रक जटिलता उत्पन्न होइत अछि; एहि जटिलताकें स्वीकार करब जीवनीक साहित्यिक परिपक्वता बढबैत अछि।

06 राजनीतिक सहभागिता, पंचायत आ जेल-यात्रा

समाजवादी आ कम्युनिस्ट विचारक सम्पर्क, १९६७क चुनावी परिवेश,
पंचायतक अनुभव आ जेल-यात्राक प्रसंग जीवनीकेँ एक राजनीतिक स्मृति-बही
बनबैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि सार्वजनिक गतिविधिकेँ सामाजिक न्याय आ
ग्राम-भागीदारीक दृष्टिसँ पढ़ैत छथि।

विचारधाराक सहयोग अथवा संगठनक सम्पर्ककेँ औपचारिक सदस्यता, पद
अथवा निर्णायक राजनीतिक भूमिका मानि देबाक पहले स्रोतवार सत्यापन
चाही। पंचायतक योजना-वितरण आ मुकदमाक घटनाक प्रश्नमे तिथिक्रम
आवश्यक अछि। राजनीतिक सन्दर्भक विस्तार व्यक्ति-जीवनकेँ उजागर करे,
मूल जीवनीक केन्द्रीय चरित्रकेँ ओझल नहि करय।

जेलक अनुभवक साहित्यिक महत्त्व आत्मचिन्तन, सहबन्दीक सम्बन्ध आ
नैतिक निर्णयमे खोजल जाय; सहानुभूतिपूर्ण वर्णन अपन आपमे किसी
ऐतिहासिक दावाक स्वतन्त्र प्रमाण नहि।

07 साहित्यिक अवदान, कृतिपञ्जी आ जीवन-रचना

सम्बन्ध

जीवनीक अन्तिम विभाग 'संघर्षसँ साहित्य दिस' आ 'साहित्यिक अवदान आ कृतित्वक विस्तार'क माध्यमसँ व्यक्ति-जीवनसँ ग्रन्थ-जीवनक सम्बन्ध बनबैत अछि। एहिमे पाठककँ पहिनुक कृषि, भूमि आ जातिगत अनुभवक साहित्यिक प्रतिबिम्ब खोजबाक प्रवृत्ति भेटैत अछि। मुदा पात्र स्वयं लेखकक छवि होयत, ई मानव साहित्य-शास्त्रक सरलीकरण अछि।

परिशिष्टमे प्रकाशित कृतिसभक सूची, विधावार वर्गीकरण, जीवन-कालक्रम, प्रमुख व्यक्ति आ स्थानक पञ्जी देल गेल अछि। जीवनीक एहन संदर्भ-उपकरण भविष्यक शोध लेल मूल्यवान अछि; लेखकक मूल ग्रन्थनाम, प्रथम प्रकाशन, पुनर्मुद्रण आ संस्करणभेदक स्थिर अभिलेख संग जाँचल जाय।

मण्डलजीक लेखकत्वक न्यायोचित मूल्याङ्कन कृतिसभक स्वतंत्र शिल्प, कथन-स्वर, पात्रक निर्णय, लोकभाषाक कार्य आ आलोचनात्मक प्रतिपक्षक सामना करबासँ होयत। जीवनीक श्रद्धापरायणता एहि स्वायत्त आलोचनाक स्थान नहि लेत।

08 पाँचम संस्करणक सम्पादकीय गुण आ सीमासभ

पाँचम संस्करणक प्रकाशन-विवरण पुस्तकमे उपलब्ध अछि: पल्लवी प्रकाशन, निर्मली, प्रथम संस्करणक पूर्व प्रकाशक आ लेखकक विशिष्ट स्वीकारोक्ति ।

एहि सूचनासँ पुस्तकक दीर्घ प्रकाशन-यात्राक पता चलैत अछि । आलोचनात्मक संस्करणमे पठनयोग्य शीर्षक, फोटो, तालिका, मुद्रण-अनुक्रम आ संस्कृत-मैथिली लिपिक विन्यास सेहो पुस्तकक विश्वसनीय भाग होइत अछि ।

समीक्षाक आधारभूत मूल फाइलमे समर्पण-पृष्ठक अन्तिम पाठ पूर्ण नहि देखाइत अछि । विद्यमान तथ्यक रूपमे एहि अनिर्णीत मुद्रण-अंशक चिन्हांकन आवश्यक अछि; प्रकाशित समीक्षाक अन्दर कोनो रिक्त निर्देश अथवा संशोधन-नोट दोहराएब उचित नहि । अन्तिम संस्करणमे स्रोत-सूचीक शीर्षकबद्धता, पृष्ठसङ्ख्या आ जीवन-वृत्तान्तक नाम/तिथि-संगति पुनःजाँचबाक चाही ।

जीवनीक अन्तिम कसौटी साहित्यक सम्मान-संस्कृतिमे अछि: प्रशंसा तखन उपयोगी होइत अछि जखन विवादास्पद घटनामे पक्षकारक न्याय, प्रमाणक सीमा आ लेखकक सम्भावित असहमति सुरक्षित रहैत अछि ।

समग्र मूल्याङ्कन

ई जीवनी लेखकक लोकजीवनसँ घनिष्ठ परिचय आ ग्रामीण समाजक बहुआयामी स्मृतिक कारण विशिष्ट अछि। परिवार, खेती, जातीय विन्यास, जमीन, सामाजिक परिवर्तन आ साहित्यमे प्रवेश एक्हि जीवन-यात्राक भीतर जुरेत अछि। इएह पुस्तकक उपलब्धि अछि: एक व्यक्ति-जीवन समाजक सूक्ष्म इतिहास बनैत अछि।

तथापि प्रमाणक स्थायित्व लेल साक्षात्कारक तिथि, अभिलेखक संदर्भ, विवादित राजनीतिक घटनाक पक्षकार आ कृतिपञ्जीक संस्करणभेदक अलग तालिका आवश्यक अछि। भाषा-सम्पादनमे क्षेत्रीय मौखिक शब्द सुरक्षित रखैत अप्रकाशित संपादकीय रिक्तता आ असंगत वर्तनी सुधरल जाय।

जीवनक संघर्षकें साहित्यिक रचनाक स्वतन्त्र मूल्यांकनक स्थानापन्न नहि मानल जाय। एहि भेदसँ जीवनी आ साहित्य-समीक्षा दुनूक विश्वसनीयता बढ़त।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। जगदीश प्रसाद मण्डल—एकटा बायोग्राफी (पाँचम संस्करण, २०२६)। संलग्न मूल Microsoft Word संस्करण; प्रकाशन-विवरण आ सम्पूर्ण समीक्षात्मक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५२

परिवार, कृषि, शिक्षा आ बेरमाक
सामाजिक इतिहासक समीक्षात्मक पाठ;
भूमि-संघर्ष, सार्वजनिक जीवन आ
साहित्यिक अवदानक प्रमाण-परीक्षण;
जीवनीक स्रोत आ संस्करणगत सीमा।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



www.videha.co.in



[GitHub Videha Archive](#)

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

छओ बाइ नौ इञ्च — विदेह